MT EDUCARE LTD.

ICSE X **SUBJECT : HINDI**

BOARD PAPER – 2017

ANSWERSHEET

(खण्ड'क')

A.1

1) ''सिखलाती प्रेम की भाषा, मानवता का देती ज्ञान,
बिन पुस्तक ज्ञान अधूरा, पढ़कर इसको बनो महान ।।''

पुस्तकें ज्ञान का भण्डार होती हैं तथा हमारी सच्ची मित्र एवं गुरु भी होती हैं । इसके अतिरिक्त पुस्तकें न केवल मनोरंजन का साधन हैं बल्कि ज्ञान में वृद्धि करती हैं । अच्छी पुस्तकें हमें रास्ता दिखाने के साथ-साथ हमारा मनोरंजन भी कराती हैं । बदले में वें हम से कुछ नहीं लेती, न हीं परेशान या हैरान करती हैं । इससे अच्छा और कौन-सा मित्र हो सकता है, जो देने का हकदार हो, लेने का नहीं । पुस्तकें प्रेरणा का भंडार होती हैं । उन्हें पढ़कर जीवन में कुछ महान कर्म करने की भावना जाग्रत होती है । महात्मा गाँधी को महान बनाने में गीता, टालस्टाय और थोरो का भरपूर योगदान था । भारत की आजादी का संग्राम लड़ने में पुस्तकों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी । मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' पढ़कर कितने ही नौजवानों ने आजादी के आंदोलन में भाग लिया था ।

पुस्तकें ही आज की मानव-सभ्यता के मूल में हैं । पुस्तकों के द्वारा एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते सारे युग में फैल जाता है । पुस्तकें किसी भी विचार, संस्कार या भावना के प्रचार का सबसे शक्तिशाली साधन हैं । तुलसीदास जी के 'रामचरितमानस' ने तथा महर्षि वेद व्यास द्वारा रचित 'महाभारत' ने अपने युग को तथा आनेवाली शताब्दियों को पूरी तरह प्रभावित किया है ।

मेरी सबसे प्रिय पुस्तक है - रामधारी सिंह 'दिनकर' की 'कुरुक्षेत्र' । यह युद्ध और शांति की समस्या पर आधारित पुस्तक है । इसमें महाभारत के उस प्रसंग का वर्णन है । जब युद्ध के समाप्त होने पर भीष्म बाणों की शैय्या पर लेटे हुए हैं । पाण्डव अपनी जीत पर प्रसन्न हैं परंतु युधिष्ठिर इतने लोगों की मृत्यु और बर्बादी पर बहुत दुखी हैं । तब युधिष्ठिर को भीष्म समझाते हैं कि अन्याय का विरोध करने वाला पापी नहीं होता बल्कि अन्याय करने वाला पापी होता है ।

दिनकर जी का यह ग्रन्थ प्रेरणा, ओज, वीरता, साहस और हिम्मत का भण्डार है । मनुष्य का धर्म है कर्म करते रहना । इस पुस्तक से हमें यही ज्ञान मिलता है कि हमें निरंतर कर्म करते रहना चाहिए । प्रकृति भी उद्यमी मनुष्य के सामने ही झुकती है इसलिए कवि इसमें विराग, संन्यास अकर्मण्यता, भोग, और निवृत्ति का विरोध करते दिखते हैं ।

कर्मवाद एवं प्रवृत्ति की प्रधानता 'कुरुक्षेत्र' में दृष्टिगोचर होती है । भीष्म निवृत तथा वैराग्य का खंडन करते हैं । समष्टि सुख के लिए कार्यरत रहना ही मोक्षदान है । अपनी सामर्थ्य और बुद्धि के आधार पर दूसरों का जीवन प्रकाशमय बनाना मनुष्य धर्म है । **[15]**

2) पर्यावरण है हम सब की जान
इसलिए करो इसका सम्मान ।

पर्यावरण है तो मानव है । वर्तमान में पर्यावरण असंतुलन की सबसे बड़ी समस्या ग्लोबल वार्मिंग है तथा जिसकी वजह से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और मानव जीवन के कदम विनाश की ओर बढ़ रहे हैं । ऐसे

समय में हम ने पर्यावरण बचाने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया तो वह दिन दूर नहीं, जिस दिन हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा । सौर व्यवस्था के सभी नौ ग्रहों में से पृथ्वी ऐसा ग्रह है, जहाँ जीवन संभव है । पृथ्वी को मानव का घर भी कहा जाता है । पृथ्वी पर जीवन का समर्थन करने वाले तत्व ऑक्सीजन, संतुलित तापमान तथा अपार जल भंडार हैं । ये हमें प्राकृतिक रूप में प्राप्त हुए हैं । पर्यावरण का सीधा संबंध इसी प्राकृतिक सम्पदा से है, जो मानव के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । इसके बिना मनुष्य का जीवन सुरक्षित नहीं है । आज मानव को इस पर्यावरण की शुद्धि पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ।

पर्यावरण को प्रभावित करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व संसाधनों का अत्याधिक प्रयोग हो रहा है । मुख्य संसाधन जल है । बढ़ती जनसंख्या से इस जलस्रोत पर दबाव बढ़ रहा है । नदियों, झीलों तथा तालाबों का जल दूषित किया जा रहा है । इस जल में तरह-तरह के दूषित रासायनिक पदार्थ व अन्य विषैले पदार्थ विसर्जित होते हैं, जिससे पर्यावरण प्रभावित होता है ।

पर्यावरण के अपकर्ष का एक मुख्य तत्व वन-कटाव है । मनुष्य की वनों पर निर्भरता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । हमें वनों से अनेक प्रकार की जड़ी-बूटियाँ प्राप्त होती हैं । इनसे कई उद्योगों के लिए कच्चा माल मिलता है । वनों के कटाव से इन सब पर बुरा प्रभाव पड़ता है इसलिए पर्यावरण की शुद्धि और मानव जीवन की सुरक्षा के लिए वनों को काटने से रोकना चाहिए ।

हम पृथ्वी के हर व्यक्ति के द्वारा उठाये गए छोटे-छोटे कदमों से बहुत आसान तरीके से अपने पर्यावरण को बचा सकते हैं जैसे - कचरे की मात्रा कम करना, कचरे को ठीक से एक ही स्थान पर फैंकना, प्लास्टिक की थैलियों का इस्तमाल न करना, पुरानी वस्तुओं को नए तरीके से प्रयोग करना, वर्षा जल संरक्षण करना और बिजली का कम-से-कम उपयोग करना इत्यादि ।

विश्व पर्यावरण दिवस एक अभियान है जो कई वर्षों से हर साल 5 जून को पूरे विश्व में पर्यावरण सुरक्षा और सफाई के लिए जनता में जागरुकता का प्रसार करने के लिए मनाया जाता है । हमें अपने पर्यावरण को बचाने के तरीके और सभी बुरी आदतें जो हमारे पर्यावरण को दिन-प्रतिदिन हानि पहुँचा रही हैं, उनके बारे में जानने के लिए इस अभियान में भाग लेना चाहिए । पर्यावरण की शुद्धि के लिए अश्मीभूत ईंधनों के विकल्पों का प्रयोग होना चाहिए, जो कम धुआँ छोड़ें । जैव कृषि को बढ़ावा दिया जाए, जिसमें रासायनिकों को प्रयोग नहीं होता । जनसंख्या नियंत्रित की जाए ताकि संसाधनों पर दबाव कम पड़े । उद्योगों की चिमनियाँ ऊँची होनी चाहिए और उनके धुएँ को वायु मार्जक तथा स्थिर वैदयुत अवक्षेपकों द्वारा शुद्ध करके वायुमंडल में छोड़ना चाहिए । समुद्री पर्यावरण की शुद्धि के लिए तेल- छलकाव की घटनाएँ रोकी जानी चाहिए । वन-कटाव रोककर वन-वर्धन अपनाया जाए । वृक्षारोपण के कार्यक्रम लोकप्रिय बनाए जाएँ ।

पर्यावरण का रखें ध्यान,
तभी बनेगा देश महान । **[15]**

3) कंप्यूटर तथा मोबाइल आज मनोरंजन के साथ-साथ हमारी जरूरत का साधन बन गए हैं । समस्त विश्व विज्ञान की नई-नई प्रौद्योगिकी विकसित व प्रयुक्त करने की प्रतिस्पर्धा में है । आज का मानव कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक धन अर्जित करना चाहता है । कंप्यूटर का आविष्कार ऐसा ही एक अत्यंत उपयोगी वैज्ञानिक चमत्कार है ।

कंम्पूटर मानव मस्तिष्क से भी तीव्र तथा प्रामाणिक उपकरण है । इसके द्वारा जोड़, घटाव, गुणा, भाग अत्यन्त तीव्र गति तथा शत-प्रतिशत शुद्धता से किए जा सकते हैं । आज विश्वभर में कंप्यूटर को उपयोगी मानकर इसका प्रसार हो रहा है । हमारे देश के विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा तकनीकि संस्थानों में इसका शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जा रहा है, स्थाान-स्थान पर इसकी सुविधाएँ उपलब्ध हैं । बैकों, रेलवे स्टेशनों, सरकारी कार्यालयों में कंप्यूटर का व्यापक उपयोग हो रहा है । ज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक, अभियंता डॉक्टर और व्यापारी आदि इसका विस्तृत व गहन प्रयोग करते हैं ।

कंप्यूटर के लाभ के अतिरिक्त इसका गलत इस्तमाल करने से काफी नुकसान भी होता है । छोटे-छोटे बच्चे पढ़ाई पर ध्यान न देकर कंप्यूटर में गेम खेलते रहते हैं और दिन-भर कंप्यूटर के आगे बैठकर समय का दुरुपयोग करते हैं ।

आजकल सभी जानकारियाँ कंप्यूटर में ही रखी जाती हैं । जिससे बहुत सारे कंम्पूटर हैकर आपकी महत्त्वपूर्ण जानकारी चुरा सकते हैं । कंप्यूटर के आने से आजकल 'साइबर क्राइम' बहुत फैल रहा है । इसमें बहुत सारे लोग बैंक से पैसे चुराने या किसी अवैध काम को इसकी मदद से करते हैं ।

मोबाइल फोन आज की जरुरत बन चुका है । आज प्रत्येक व्यक्ति के पास मोबाइल फोन है । यह लोगों के लिए इतना महत्त्वपूर्ण हो गया है कि लोग इसे चाह कर भी नहीं छोड़ पाते हैं । मोबाइल के नेटवर्क ने देश दुनियां में बहुत तरक्की कर ली है । मोबाइल आज तकनीकि का नायाब नमूना है । इसमें इन्टरनेट की सहायता से देश दुनिया के बारे में जाना जा सकता है । यह देश-विदेश में एक दूसरे से बातचीत करने का सबसे सस्ता और अच्छा यंत्र है । मोबाइल से हमें हर चीज उपलब्ध हो जाती है । जिस प्रकार नई-नई जानकारियाँ, नए-नए पुस्तकों का ज्ञान, संगीत सुनना, समाचारों का ज्ञान आदि । कहते हैं कि जितनी आवश्यकताएँ बढ़ती हैं उतनी ही नई परेशानियाँ सामने आ जाती हैं । अब मोबाइल ही देखिए, जितनी बड़ी सुविधा प्रदान करती है, उससे अधिक असुविधा है । मोबाइल फोन की वजह से कभी हमें कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है - जैसे अनचाहे नंबरों से फोन आना, व्यक्तिगत जीवन में बाधा उत्पन्न होना, न चाहकर भी कुछ फोन कॉलों से रात्रि में या जब हम फोन से दूर रहने का प्रयास करते हैं, तब हमें फोन का उपयोग करना पड़ता है और आवश्यक काम न होने पर हम झुझँला जाते हैं इसके कारण कभी-कभी आवश्यक फोन कॉलों को भी हम स्वीकार नहीं करते हैं ।

इसलिए आवश्यकताओं को सीमित करके व्यक्ति को सावधानी से मोबाइल फोन का इस्तमाल करना चाहिए ताकि उसके कारण कोई व्यक्ति मुसीबत में न पड़े । **[15]**

4) ऋगवेद में कहा है–'न स सखा यो न ददाति सख्ये' अर्थात वह मित्र ही क्या जो अपने मित्र की सहायता नहीं करता । आजकल स्वार्थ बढ़ता जा रहा है । त्याग के आनंद का दूसरे के उपकार से मिलने वाले संतोष का लोगों को पता ही नहीं है । कठिन समय में मदद करने वाला मित्र ही असली मित्र है । आइए, ऐसे ही एक मित्र की कहानी हम पढ़ते हैं' जिसने आज की स्वार्थ-पूर्ण दुनिया को दिखा दिया कि इस संसार में नि:स्वार्थ सेवा करने वाले लोग आज भी हैं ।

अच्छे दोस्त एक दूसरे की संवेदनाओं और भावनाओं को बाँटते हैं, जो स्वस्थ होने और मानसिक संतुष्टि का एहसास लाता है । दोस्ती में शामिल दो व्यक्तियों के स्वभाव में कुछ एकरूपता होने के बावजूद उनके पास कुछ अलग विशेषताएँ होती हैं लेकिन बिना एक दूसरे के अनोखेपन को बदले उन्हें एक दूसरे की जरूरत होती है । आमतौर पर बिना आलोचना के दोस्त एक-दूसरे को प्रेरित करते हैं लेकिन कई बार कुछ सकारात्मक बदलाव लाने के लिए एक मित्र दूसरे मित्र की बुराई भी करता है ।

पौराणिक कथाओं में तो दोस्ती के अनेक उदाहरण हैं जैसे - राम और सुग्रीव की मैत्री, कृष्ण और अर्जुन, कृष्ण और सुदामा आदि । आज ऐसे ही दो मित्रों की कहानी सच्ची मित्रता का उदाहरण है ।

रोहन और राजीव बचपन से ही साथ में पढ़ते-खेलते बड़े हुए । रोहन अमीर पिता का इकलौता पुत्र था । जिसने अपना बचपन माँ की गोद में नहीं बिताया । जब वह 5 वर्ष का था तब उसकी माँ का निधन हो गया था ।

पिता अपने कारोबार में व्यस्त रहते थे और अधिक पैसा कमाने के लालच में करोड़ों का कर्ज भी था । रोहन को पैसों की कमी नहीं थी और उसका ध्यान पढ़ने में भी नहीं लगता था ।

वहीं राजीव पढ़ने में बहुत होशियार था परंतु गरीब परिवार से था । बचपन में ही पिता का देहान्त हो गया और माँ ने मजदूरी करके उसे पढ़ाया-लिखाया । कठिन परिश्रम व लगन से राजीव ने भारत में प्रशासनिक अधिकारी के पद का भार सँभाला ।

उधर रोहन के पिता कर्ज के बोझ तले दबते जा रहे थे और धीरे-धीरे उनका शरीर भी क्षीण होता जा रहा था । व्यापार में नुकसान होते देख एक दिन उन्हें दिल का दौरा पड़ गया और उनका निधन हो गया । पिता की मृत्यु के बाद रोहन पर पूरे घर की जिम्मेदारी आ गई अब व्यापार भी न रहा और रोहन की आर्थिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी ।

बहुत लंबे समय के पश्चात राजीव की मुलाकात रोहन से हुई । रोहन की दशा देखकर राजीव बहुत दुखी हुआ और उसने तय किया कि वह रोहन की मदद अवश्य करेगा । उसने माँ को रोहन की कहानी सुनाई, माँ भी बहुत दुखी हुई और उन्होंने अपने बेटे से कहा कि तुम रोहन को अपने घर ले आओ । राजीव मित्र को अपने घर लाया और उसे नौकरी दिलाई । रोहन का जीवन राजीव की मित्रता के कारण सँवर गया । ऐसी निस्वार्थ दोस्ती थी राजीव व रोहन की । **[15]**

5) हमारे देश में बाल श्रमिकों की समस्या कोई नई बात नहीं है । स्वतंत्रता से पूर्व इन श्रमिक बच्चों को 'मुण्डू' कहकर पुकारा जाता था । जहाँ अशिक्षा, निर्धनता की अधिकता होती है वहीं बालक और बालिकाएँ बालमजदूरी करने के लिए मजबूर हो जाते हैं ।

अब गाँवों और शहरों में छोटे बच्चों को घरों, होटलों, ढ़ाबों, दुकानों, कल-कारखानों और फैक्ट्रियों में कठोर श्रम कराया जाता है । यही नहीं धूम्रपान पर रोक लगाने के बजाय छोटी-छोटी बच्चियों से धूम्रपान की वस्तुएँ बनवाई जाती हैं । जहाँ उनके पढ़ने और खेलने की उम्र होती है, वहीं उन मासूम बच्चों के कोमल हाथों से कठिन मेहनत कराया जाता है । स्वतंत्र भारत के सुकुमार बचपन की सचमुच कितनी दयनीय स्थिति दिखाई देती है ।

बाल श्रमिकों का मूल स्त्रोत दरिद्रता, माता-पिता की कठोरता, पढ़ाई से जी चुराना, विमाता का दुर्व्यवहार तथा कुसंगति है तथा कुछ परम्परागत कारण भी होते हैं । जैसे - मोची, बढ़ई कुम्हार, लोहार, दर्जी आदि स्वभाव से श्रमजीवी होते हैं । स्वावलंबी होने के लिए वे अपने पैतृक कार्य में जुट जाते हैं । उपर्युक्त चित्र में छोटी-छोटी बच्चियों से मजदूरी कराई जा रही है, जो बालमजदूरी कही जाती है बालमजदूरी एक कानूनन अपराध है । इसके अतिरिक्त उन अबोध बच्चों द्वारा धूम्रपान व नशीली वस्तुएँ बनाई जा रही हैं । उन्हें मजबूरन उस अँधेरे में धकेला जा रहा है, जहाँ उनका जीवन समाप्त हो सकता है । ऐसे वातावरण में रहने के कारण वे भी नशे के आदी हो जाते हैं और उनके स्वास्थ्य एवं जीवन पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है ।

बाल श्रमिक, युवा-श्रमिक की अपेक्षा सस्ते में मिल जाते हैं । जिन पर कोई भी आसानी से अत्याचार कर सकता है । 'कम दाम और मनमानी काम' यही मनोवृत्ति इनके शोषण का मूल कारण है कानूनी रूप से चौदह वर्ष से कम बच्चों से काम कराना अपराध है किंतु गरीबी और भुखमरी की स्थिति में माता-पिता स्वयं ही इन मासूम बच्चों को अमीर । जमींदारों और ठेकेदारों के हाथों में बेच देते हैं, जिनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है ।

किसी ने सत्य कहा है कि .....

माता-पिता दुश्मन बन जाते हैं,
जब वे नन्हें हाथों से काम करवाते हैं ।''

बाल मजदूरी का मुद्दा अब अन्तर्राष्ट्रीय हो चुका है क्योंकि देश के विकास और वृद्धि में ये बड़े तौर पर बाधक बन चुका है । स्वस्थ बच्चे किसी भी देश के लिए उज्जवल भविष्य और शक्ति होते हैं । अत: बाल मजदूरी बच्चे के साथ ही देश के भविष्य को भी नुकसान, खराब और बरबाद कर रहा है ।

कई बच्चे अपने माता-पिता के साथ बिना मजदूरी के भी काम करते हैं, जिनका ऑकड़ा अभी उपलब्ध नहीं है । कुटीर उद्योगों में बच्चों की एक बड़ी संख्या काम रही है, जैसे-माचिस बनाना, बीड़ी बनाना, चमड़ा उद्योग, प्लास्टिक उत्पादन, तंबाकू बनाना, तथा पटाखे की फैक्ट्रियों जैसे खतरनाक स्थानों पर कार्य करना । इस प्रकार शिक्षा, भोजन, पानी और घर के अभाव के साथ-साथ कार्य स्थल पर उनका भावनात्मक एवं यौन उत्पीड़न भी होता है जिसके कारण उनका बचपन पूरी तरह बरबाद हो जाता है ।

सरकार ने यद्यपि बाल मजदूरी रोकने के लिए कानून बनाए हैं जिसमें 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम करवाना एक दंडनीय अपराध है, तब भी लोग कानून का उल्लंघन करके बच्चों से मजदूरी करवाते हैं । सरकार को इस अमानवीय तथा घृणित प्रथा को रोकने के लिए और भी कठोर कानून बनाने चाहिए तथा समाज को कलंकित करने वाली इस बुराई को जड़ से समाप्त करने के लिए हर संभव कदम उठाना चाहिए । हमारे देश में अकसर बालमजदूरी के खिलाफ आवाज उठाई जाती है और इस प्रकार के नारे लगाए जाते हैं ।

''अभी करनी है हमको पढ़ाई
मत करवाओ हम से कमाई ।''

सरकार भी इसे रोकने के लिए नए-नए कदम उठा रही है, इसके बावजूद भी देश में बालमजदूरों की संख्या बढ़ती जा रही है । दुनियाँ में सबसे अधिक बालश्रमिक भारत में ही हैं । **[15]**

A.2

1) सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
सर्वोदय अस्पताल,
थाने नगर निगम,
मुंबई ।
दिनांक : 24 अप्रैल, 2017

विषय : एक सुविधायुक्त सरकारी अस्पताल खुलवाने हेतु पत्र ।

माननीय महोदय,

निवेदन है कि मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र के साधारण सा सरकारी अस्पताल की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ, जिसके कारण आम जनता को बहुत अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है ।

मैं सिविल लाइंस का निवासी हूँ । हमारे क्षेत्र में एक ही साधारण सा अस्पताल है और जिसमें सारी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं, जिस कारण आम जनता को सुविधाएँ प्राप्त नहीं हो रही हैं । मरीजों का ठीक से इलाज न होने पर कितने ही लोगों के प्राण संकट में हैं । मरीजों के रहने के लिए कमरों की व्यवस्था नहीं है, जिस कारण मरीजों को खुले आसमान के नीचे ही प्रतीक्षा करनी पड़ती है और लम्बी प्रतीक्षा करने के पश्चात् अस्पताल में पूरी सुविधा न मिलने के कारण कई लोगों को मौत का सामना करना पड़ता है ।

आपसे अनुरोध है कि आप इस समस्या को गंभीरता से लेंगे और हमारे क्षेत्र में एक नया सरकारी सुविधा युक्त अस्पताल खोलने की कृपा करेंगे ।

सधन्यवाद ।

भवदीय,
सुधांशु अटवाल **[7]**

2) 16, सरोजनी नगर
दिल्ली
दिनांक : 24 अप्रैल 2017

प्रिय मित्र राजेश,

सप्रेम नमस्कार ।

बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं मिला, आशा करता हूँ कि तुम सकुशल होंगे । पिछले कई दिनों से तुम्हें पत्र लिखने की सोच रहा था परंतु मासिक परीक्षा में व्यस्त रहने के कारण पत्र नहीं लिख पाया । तुम्हें पत्र के

माध्यम से कई नई जानकारियाँ देना चाहा परंतु समय के अभाव के कारण नहीं दे पाया । आज मैं तुम्हें पत्र में कुछ नए अनुभवों के बारे में बताने जा रहा हूँ ।

मुझे तुम्हें यह बताते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि हमारा देश ओलम्पिक खेलों में कितना अग्रसर हो रहा है । इस वर्ष के ओलंपिक खेलों में जिस प्रकार हमारे देश के होनहार खिलाड़ियों ने प्रदर्शन किया उसे देखकर ऐसा लग रहा है कि आने वाले समय में हमारे देश बहुत प्रगति करेगा । भारत की महिला खिलाड़ी पी.वी. सिंधु, साक्षी मलिक, दीपा कर्मकार और दीपा मलिक ने सराहनीय प्रदर्शन किया और मेडल जीतकर भारत का सम्मान बनाए रखी । 45 वर्ष की दीपा मलिक ने रजत पदक जीतकर एक नया इतिहास कायम कर दिया । रियों पैरालिंपिक में जीतने वाला भाला फेंक खिलाड़ी देवेन्द्र झझरिया ने सभी भारतवासियों का दिल जीत लिया ।

आशा करता हूँ कि हमारे देश के ओलंपिक खेलों की उपलब्धियों को देखकर तुम्हें भी अवश्य प्रसन्नता होगी और तुम्हें भी खेलों के प्रति रुचि जाग्रत होगी । अच्छा अब पत्र यहीं समाप्त करता हूँ । अंकल व आंटी को मेरा प्रणाम कहना ।

तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में ।

तुम्हारा मित्र,

आलोक **[7]**

A.3

i) राज्य को भयंकर अकाल का सामना करना पड़ा था । उन दिनों पंजाब राज्य के राजा महाराज रणजीत सिंह थे । उन्होंने राज्य के भयंकर अकाल की समस्या से बचाने के लिए घोषणा करवा दी कि शाही भण्डार हर जरुरतमंद के लिए खुला रहेगा और प्रत्येक जरुरतमंद एक बार में जितना अनाज लेना चाहे, ले जाए । **[2]**

ii) महाराज रणजीत सिंह ने राज्य में घोषणा करवा दी कि राज्य का शाही भण्डार गृह प्रत्येक जरुरतमंद के लिए खुला रहेगा । एक बार में जरुरतमंद जितना अनाज ले जाना चाहे, ले जा सके । ऐसा उन्होंने इसलिए किया ताकि प्रत्येक जरुरत मंद को अनाज मिलेगा और अकाल की वजह से प्रजा को कोई कष्ट नहीं होगा । **[2]**

iii) उस समय लाहौर में एक वृद्ध सज्जन रहते थे । वे कट्टर सनातनी विचारों के थे । उनके घर में एक ही पुत्र था जो काबुल युद्ध में शहीद हो गया था । घर की सारी जिम्मेदारी वृद्ध सज्जन पर ही थी । उनके घर में उनकी बहू व पोते ही थे । अकाल के समय वे बच्चे बूढ़े दादा की प्रतीक्षा कर रहे थे । बूढ़े आदमी ने कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया था । **[2]**

iv) जब अनाज बाँटा जा रहा था, तो बूढ़े आदमी ने थोड़ा-सा ही अनाज लिया क्योंकि वे कट्टर विचारों के थे और उन्होंने कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया था । बूढ़े आदमी ने सोचा कि इस अकाल में थोड़ा अनाज लेना ही सही है, जिससे सभी जरुरतमंदो को अनाज मिल जाए । अजनबी व्यक्ति बूढ़े को देख रहा था, उसने बूढ़े की गठरी खोल दी और उसमें भरपूर अनाज भर दिया । व्यक्ति ने बूढ़े की गठरी अपने कंधों पर ले ली और उनके घर पहुँचा दिया । घर पहुँचने पर बूढ़े आदमी कोपता चला कि वह व्यक्ति कोई और नहीं स्वयं राजा रणजीत सिंह हैं । **[2]**

v) इस गद्यांश से हमें शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को स्वावलंबी होना चाहिए । जिस प्रकार बूढ़ा व्यक्ति वृद्ध व निर्धन होने पर भी थोड़ा अनाज लेकर यह बताना चाहता है कि दान भी उतना ही लेना चाहिए जितनी आपको आवश्यकता हो । दूसरे के बारे में भी सोचना चाहिए ताकि विकट परिस्थितियों में सभी को मदद मिल सके । इसके अतिरिक्त हमें अपनी संपति का अहंकार नहीं होना चाहिए । इस गद्यांश में राजा रणजीत सिंह के द्वारा बूढ़े आदमी की मदद करना हमें यह सिखलाता है कि मनुष्य को परोपकारी व दयालु होना चाहिए । **[2]**

A.4

i) (a) आनंद - हर्ष, उल्लास, प्रसन्नता **[1]**

(b) पुत्र - तनय, सुत बेटा, नंदन **[1]**

(c) राक्षस - दानव, दैत्य, असुर, निशाचर **[1]**

ii) (a) आलस्य × स्फूर्ति **[½]**

(b) सदाचार × दुराचार **[½]**

(c) सामिष × निरामिष **[½]**

(d) कृत्रिम × प्राकृतिक **[½]**

iii) (a) प्रतीष्ठा - प्रतिष्ठा **[½]**

(b) गृन्थ - ग्रंथ/ग्रन्थ **[½]**

(c) परीस्थिती - परिस्थिति **[½]**

v) (a) **अपना उल्लू सीधा करना -** अपना मतलब निकालना ।

वाक्य - संसार में प्रत्येक स्वार्थी मनुष्य **अपना उल्लू सीधा करता है ।** **[1]**

(b) **हाथ मलना -** पछताना ।

वाक्य - समय का सदुपयोग न करने वाले विद्याार्थी बाद में **हाथ मलते** रह जाते हैं । **[1]**

6) (a) विद्यार्थी को <u>जिज्ञासु</u> होना चाहिए । **[1]**

(b) इतनी आयु होने पर भी वह अविवाहित है । **[1]**

(c) रात में सर्दी बढ़ रही है । **[1]**

(d) अन्याय के सब <u>विरोधी</u> होते हैं । **[1]**

Section 'B' (40 marks)

साहित्य सागर – संक्षिप्त कहानियाँ

A.5

i) बाबू जगतसिंह जो एक इंजीनियर थे और उनका नौकर रसीला था । जगतसिंह रसीला को फँसा रहे थे । रसीला ने अठन्नी की चोरी का अपराध किया था । उसे पैसों की आवश्यकता थी, परंतु बाबू जगतसिंह ने रसीला की मदद नहीं की और रसीला से जब बाबू जगतसिंह ने पाँच रुपये की मिठाई मँगाई, तो रसीला साड़े चार रुपये की मिठाई लाया और अठन्नी अपने पास रख ली । **[2]**

ii) रसीला बाबू जगतसिंह का नौकर था । वह इंजीनियर बाबू के घर पर काफी समय से काम करता और ईमानदार भी था । उसे १० रुपये वेतन मिलता था उसका परिवार गाँव में रहता था । गाँव में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, दो लड़के और एक लड़की थी । रसीला के वेतन से घरवालों का गुज़ारा नहीं हो पाता था । रसीला का एक घनिष्ठ मित्र था रमजान, जिसने रसीला की बहुत मदद की । **[2]**

iii) हमें अपने नौकरों से अच्छा व्यवहार करना चाहिए । जब हम उसके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे और उन पर विश्वास करेंगे तब वे मेहनत व ईमानदारी से काम करेंगे । उनके काम के अनुसार ही हमें उनको वेतन देना चाहिए ताकि उनकी आवश्यकता पूरी हो जाए और वे चोरी जैसा घिनौना काम न करें । जिस प्रकार बाबू

	जगतसिंह ने परेशानी के समय में रसीला की मदद नहीं की और रसीला अपनी आवश्यकता के लिए चोरी करने पर मजबूर हो गया और जेल की कोठरी में पहुँच गया उसी प्रकार घरों में काम करने वाले लोगों को अधिक श्रम करना पड़ता है, परंतु वेतन इतना कम कि परिवार का भरण पोषण नहीं हो पाता है । परिवार की आवश्यकता पूर्ति के लिए वे अपराध करने पर बाध्य हो जाते हैं । इसलिए प्रत्येक मनुष्य को अपने नौकरों के साथ अच्छा व सद्व्यवहार करना चाहिए ।	**[3]**
iv)	इस कहानी के माध्यम से लेखक ने हमारे समाज की न्याय व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है, साथ ही समाज के उच्च व सम्मानित पदों पर आसीन लोगों पर भी व्यंग्य किया है जो रिश्वत खोर होकर भी सम्मानित जीवन व्यतीत कर रहे हैं जबकि एक गरीब व्यक्ति मात्र अठन्नी की हेरा-फेरी करने के जुर्म में छह महीने की कैद भोगने पर मजबूर है । लेखक ने बाबू जगतसिंह व शेख सलीमुद्दीन की हृदयहीनता का पर्दाफाश किया है और एक निर्धन चौकीदार रमजान की दयालुता को उजाकर किया है, जिसने रसीला के परिवार की मदद की । इस कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त बुराई व भ्रष्टाचार को दिखाने का प्रयास किया और वे सफल भी हुए ।	**[3]**
A.6		
i)	मूर्ति नेताजी सुभाषचन्द्र की थी । कस्बे की नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने 'कस्बे के मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की संगमरमर की एक प्रतिमा लगवा दी ।	**[2]**
ii)	नेताजी की मूर्ति कस्बे के इकलौते हाईस्कूल के इकलौते ड्राइंग मास्टर मोतीलाल ने बनाई थी । मूर्ति संगमरमर की थी, टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची थी । नेताजी फौजी वर्दी में सुंदर मासूम और कमसिन लग रहे थे । मूर्ति को देखते हीं दिल्ली चलो ? और तुम मुझे खून दो ..... आदि याद आने लगते थे । नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था बल्कि एक सामान्य और सचमुच के चश्मे को चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था ।	**[2]**
iii)	मूर्ति में एक कमी थी जो देखते ही खटकती थी । नेताजी की आँखों पर संगमरमर का चश्मा नहीं था । एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था । उस चश्मे की कमी को कैप्टन चश्मेवाला पूरा करता था । वही नेताजी की मूर्ति पर चश्मे का फ्रेम लगा देता था । यदि ग्राहक वही नेताजी की मूर्ति पर लगे फ्रेम की माँग करता, तो वह मूर्ति पर लगा फ्रेम ग्राहक को दे देता और वहाँ कोई दूसरा फ्रेम लगा देता था । इस प्रकार गरीब चश्मेवाला नेताजी की मूर्ति के चश्मे की कमी को पूरा करता था ।	**[3]**
iv)	नेताजी सुभाषचंद्र बोस स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे जिन्होंने 'आजाद हिन्द फौज' का नेतृत्व किया । वे आजाद हिंद फौज के नेता थे । उनका जन्म उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था । नेताजी के द्वारा दिया गया नारा 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है । चौराहे पर नेताजी की मूर्ति लगाने का उद्देश्य था कि लोगों में देश भक्ति की भावना जाग्रत हो और देश के सभी छोटे-बड़े व्यक्ति देश के निर्माण में अपना योगदान दे सके । एक सामान्य नागरिक चश्मेवाले के माध्यम से देश के प्रति निष्ठा और देशभक्ति की भावना को प्रकाशित किया है ।	**[3]**
A.7		
i)	उपर्युक्त कथन बूढ़ा सियार, भेड़िए से कह रहा है क्योंकि जब भेड़िए के चुनाव के प्रचार के लिए बूढ़ा सियार अपने साथ तीन रंगे सियारों को लेकर आया, तब भेड़िए ने कहा कि इन पर कौन विश्वास करेगा । भेड़िए के	

	ऐसा संदेह प्रकट करने पर बूढ़े सियार ने कहा कि सरकार आप बहुत सीधे हैं, रंग-रूप बदल देने से तो आदमी तक बदल जाते हैं फिर तो सियार हैं ।	[2]
ii)	बूढ़े सियार ने भेड़िए का रूप बदला भेड़िए के मस्तक पर तिलक लगाया, गले में कंठी पहनाई और मुँह में घास के तिनके खोंस दिए ताकि भेड़ों को विश्वास हो जाए कि भेड़िया संत हो गया है और वे भेड़िए को अपना प्रतिनिधि चुनकर पंचायत में भेज दें ।	[2]
iii)	यह एक व्यंग्यात्मक कहानी है जिसमें लेखक ने चालाक राजनेताओं की पोल खोलने के लिए भेड़ें और भेड़िए की इस कहानी को माध्यम बनाया है । बूढ़े सियार ने भेड़िए को भेड़ों की सभा में जाने से पहले तीन बातों का ध्यान रखने के लिए कहा-अपनी हिंसक आँखों को ऊपर मत उठाना, हमेशा जमीन की ओर देखना और कुछ बोलना मत, नहीं तो पोल खुल जाएगी । बूढ़े सियार ने ये बातें इसलिए कही ताकि भेड़ों को भेड़िए पर विश्वास हो जाए और पंचायत में भेड़िए की जीत हो ।	[3]
iv)	बूढ़े सियार ने तीन सियारों को अलग-अलग रंगों में रँगा । एक को पीले रंग में दूसरे को नीले रंग में और तीसरे को हरे रंग में रंगा । पीलावाला विद्वान, विचारक, लेखक और कवि है । नीला वाला नेता और पत्रकार है । हरावाला धर्म गुरु है । इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें प्रजातंत्र के नाम पर धोखेबाज, झूठे, ढ़ोंगी, राजनेताओं पर विश्वास नहीं करना चाहिए और अपने मत का सोच-समझकर सदुपयोग करना चाहिए । अन्याय व भ्रष्टाचार के माध्यम से राजनेता भोली-भाली जनता का शोषण करते हैं ।	[3]
	साहित्य सागर–पद्य भाग	
A.8		
i)	मेघ अतिथि की भाँति सज-सँवरकर आकाश में छाए हुए हैं'' । कवि को ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे शहर से किसी मेहमान के आने पर गाँव के लोग उसका स्वागत करते हैं, उसी प्रकार बादल भी सज-धजकर आए हैं और प्रकृति बादलों का स्वागत कर रही है । मेघों के आते ही प्रकृतिक वातावरण में हलचल-सी प्रतीत होती है ।	[2]
ii)	'बयार' शब्द का अर्थ है हवा वर्षा होने से पूर्व हवा के तेज-तेज झोंके चलते हैं । यहाँ कवि कहना चाहते हैं कि बादलों को सज-धज कर आते देख हवा मदमस्त होकर नाचती गाती सी चलने लगती है । हवा के चलने पर गलियों में स्थित घरों के दरवाजे व खिड़कियाँ खुलने लगती हैं । यहाँ कवि ने मेघ का मानवीकरण कर उसे अतिथि का रूप प्रदान किया है । जैसे शहर से गाँव में आये अतिथि का स्वागत करने के लिए सब अपने घरों से झाँकने लगते हैं और नाच-गाकर उसका स्वागत करते हैं वैसे ही हवा भी बहुत प्रसन्न है और बादलों का स्वागत कर रही हैं ।	[2]
iii)	बादलों के आसमान में आते ही हवा तेज-तेज चलने लगती है । उस हवा के झोंकों से गली के घरों और दरवाजे की खिड़कियाँ खुलने लगती हैं । यहाँ पर कवि बादलों की तुलना शहर से गाँव में आए हुए अतिथि से कर रहे हैं जो कि लंबी प्रतीक्षा करवाने के बाद गाँव में आए हैं । इस अतिथि के आगमन से न केवल गाँव के लोग बल्कि नदी-नाले, पेड़-पौधे, पीपल सभी प्रसन्न हो उठते हैं ।	[3]
iv)	इस कविता में कवि ने मेघों का मानवीकरण किया है । मेघों को सजे-सँवरे अतिथि (दामाद) से की गई है । ग्रामीण संस्कृति में किसी शहरी अतिथि या दामाद के आने पर उल्लास का जो वातावरण बनता है, आकाश में मेघों के आने का वर्णन करते हुए कवि ने उसी उल्लास को दर्शाया है । जिस तरह अतिथि के आने पर गाँव के बच्चे दौड़-	

	दौड़कर सबको सूचना देते हैं । उसी प्रकार मेघ के आने की सूचना देने के लिए हवा तेज गति से चलने लगती है । जिस प्रकार अतिथि के आने पर गाँव के लोगों की प्रतिक्रिया होती है, उसी प्रकार बादलों के आगमन पर प्रकृति की प्रत्येक वस्तु जैसे - हवा, पेड़, ताल, लता, व बूढ़ा पीपल आदि अपनी प्रतिक्रिया देने लगते हैं ।	[3]
A.9		
i)	कवि गुरु व ईश्वर दोनों के बारे में सोच रहे हैं । वे सोच रहे हैं कि मेरे समक्ष गुरु व ईश्वर दोनों खड़े हैं और मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि मुझे पहले किसके चरण स्पर्श करना चाहिए । कवि फिर स्वयं विचार करते हैं कि उन्हें पहले गुरु के ही चरण स्पर्श करना चाहिए क्योंकि गुरु ने ही उन्हें ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाया ।	[2]
ii)	कवि अपने गुरु के चरणों में न्योछावर (समर्पित) हो जाना चाहते हैं क्योंकि गुरु ईश्वर से भी बढ़कर हैं । गुरु ने ही उन्हें ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाया अर्थात ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताया । उनका मानना है कि यदि गुरु उनका मार्गदर्शन न करते, तो वह ईश्वर तक नही पहुँच पाते । गुरु ही अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाते हैं और वे अपने शिष्य को उत्तम ज्ञान देकर उसे महान बनाते हैं ।	[2]
iii)	जहाँ अहंकार रहता है वहाँ ईश्वर का वास नहीं होता । जिसके मन में अहंकार होता है वहाँ ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती । इसलिए कवि हमें अहंकार का त्याग करने के लिए कहते हैं । अहंकार और प्रेम अर्थात ईश्वर दोनों एक ही स्थान पर नहीं रह सकते । कवि कबीरदास निर्गुण भक्ति शाखा के कवि हैं इनका जन्म संवत 1455 में माना जाता है । कबीरदास जी पढ़े-लिखे नहीं थे । इन्होंने मूर्ति-पूजा, ढोंग-आडंबर आदि का डटकर विरोध किया । इनकी भाषा में अनेक भाषाओं के शब्दों का मेल है । इनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' या 'पंचमेल खिचड़ी' कहा जाता है ।	[3]
iv)	'साँकरी' का अर्थ होता है तंग, सँकरी या पतली । कवि कहते है कि ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बहुत तंग है पतला है । ईश्वर की भक्ति में अहंकार के रहते नहीं किया जा सकता इसलिए कबीरदास जी कहते है कि अहंकार और प्रेम (ईश्वर) एक साथ नहीं रह सकते । जब तक मनुष्य के मन में अहंकार है तब तक वहां ईश्वर की भक्ति नहीं है और जब अहंकार दूर हो जाएगा तब तक ईश्वर की साधना कर सकता है । ईश्वर प्राप्ति का मार्ग तंग है इसलिए उसमें एक ही वस्तु समा सकती है अहंकार या प्रेम । मन में 'मैं' है तो हरि (ईश्वर) नहीं और ईश्वर हैं तो अहंकार मैं नहीं । इसलिए कवि ने प्रेम की गली को साँकरी (तंश) कहा है ।	[3]
A.10		
i)	सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता में मातृमंदिर की ओर का तात्पर्य मातृभूमि अर्थात धरती माता से है । कवयित्री को मातृभूमि के प्रांगण से बलिदान होने के लिए स्वरों की गूँज सुनाई दे रही है इसलिए वह ईश्वर से प्रार्थना करती है कि मुझे मातृभूमि की करुण पुकार सुनाई दे रही है । मुझे जल्दी-से-जल्दी मातृमंदिर में पहुँचने के लिए सहायता करें जिससे मैं मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर सकूँ ।	[2]
ii)	कवयित्री अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान करने को तत्पर है, वह अपने देश के लिए बलिदान हो जाने के पथ पर आगे बढ़ना चाहती हैं । वह कहती हैं कि मैं अपनी मातृभूमि पर कभी भी अन्याय नहीं होने दूँगी, चाहे उसके लिए उन्हें अपने प्राण ही क्यों ने देने पड़ें । वह अपनी मातृभूमि से अत्यन्त प्रेम करती हैं और उनके हृदय में देश-प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी है । इसलिए कवयित्री अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योंछावर कर देना चाहती हैं ।	[2]

iii)	कवयित्री को मंदिर तक पहुँचने के मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । मातृमंदिर की ओर जाने वाले मार्ग में अनेक पहरेदार खड़े हैं, जो कवयित्री को उस मार्ग में आगे बढ़ने से रोकते हैं । मातृमंदिर में जाने के लिए ऊँची-ऊँची सीढ़िया हैं, जिनमें वह चढ़ नहीं सकती क्योकि उनके कमजोर पैर उस दुर्गम रास्ते में फिसलते हैं और वह आगे नहीं बढ़ पाती । कवयित्री कहती हैं कि वह अज्ञानी और दीन हैं, जिस कारण उनके मातृमंदिर जाने के मार्ग में अनेक बाधाएँ आ रही हैं और उनका मार्ग रोक रही हैं ।	**[3]**
iv)	प्रस्तुत पद्यांश में कवयित्री का हृदय राष्ट्र प्रेम की भावना से ओत-प्रोत है । वह मातृभूमि रूपी माँ के चरणों में पहुँचने को तत्पर हैं । वह अपने देश की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने को तैयार हैं तथा किसी भी प्रकार से अपनी मातृभूमि को अत्याचारों स बचाना चाहती हैं । वह देश में व्याप्त अत्याचार, हिंसा, आदि के वातावरण को सदा के लिए समाप्त कर देना चाहती हैं तथा देश में समानता व बंधुत्व की भावना का विकास करना चाहती हैं । कवयित्री इस कविता के माध्यम से पाठकों को संदेश देना चाहती हैं कि हमें अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए । मातृभूमि की सेवा के लिए हमें अपने प्राणों का भी त्याग करना पड़ें, तो हमें पीछे नहीं हटना चाहिए ।	**[3]**
	नया रास्ता (सुषमा अग्रवाल)	
A.11		
i)	जब अमित की माँ अमित से सरिता के रिश्ते की बात करती हैं, तब अमित कहता है कि माँ क्या बड़े घर की बेटी तुम्हारे साथ रह सकेगी ? वह अमीर घर की लड़की है । क्या वह हमारे घर के वातावरण में घुल-मिल सकेगी ? माँ मीनू में क्या कमी है ? अमित के मुँह से मीनू की प्रशंसा सुनकर माँ समझ गई कि अमित सरिता के रिश्ते के लिए तैयार नहीं है ।	**[2]**
ii)	अमित के पिता मायाराम जी दहेज-विरोधी थे और सरिता के पिता अपनी पुत्री को विवाह में पाँच लाख रुपये दहेज देने की बात कर रहे थे । मायाराम जी अपने पुत्र को किसी के हाथों बेचना नहीं चाहते थे । उन्हें मीनू का स्वभाव भी अच्छा लगा, मीनू पढ़ी-लिखी गुणवती थी और मीनू के रिश्ते को ठुकराकर वह किसी का दिल-दुखाना नहीं चाहते थे । इसलिए मायाराम जी सरिता के रिश्ते को स्वीकार नहीं करना चाहते थे ।	**[2]**
iii)	अमित और सरिता के रिश्ते के लिए माँ अपने पति मायाराम जी को उकसाती है । वह मायाराम जी से कहती है कि मीनू के पिता दयाराम को एक पत्र लिखिए और उस पत्र में मीनू का नहीं बल्कि उसकी छोटी बहन आशा के रिश्ते की बात कीजिए । ऐसा करने पर दयाराम जी बड़ी बेटी को छोड़कर छोटी बेटी का विवाह नहीं करना चाहेंगे और रिश्ता स्वयं ही टूट जाएगा । तत्पश्चात् हम अमित का रिश्ता सरिता से तय कर देंगे । माँ की ऐसी धारणा से उनके लालची स्वभाव के बारे में पता चलता है । सरिता से बेटे का विवाह कराने पर उन्हें पाँच लाख रुपये दहेज मिलेंगे और दहेज के लालच में वह मीनू का रिश्ता ठुकरा देती हैं ।	**[3]**
iv)	शादी के विषय में हमारे समाज की यह परंपरा है कि लड़कियों का विवाह शीघ्र कर देना चाहिए और बड़ी बेटी का विवाह होने के बाद ही छोटी बेटी का विवाह करना चाहिए । बेटी को हमारे समाज में माता-पिता के लिए बोझ समझा जाता है, परंतु आजकल के समय में लड़कियाँ समाज के लिए बोझ नहीं है । प्राचीन समाज की इस परंपरा से आधुनिक समाज से कोई भी लोग सहमत नहीं हो सकते क्योंकि आधुनिक युग की नारी अपने पैरों पर खड़े होना चाहती है । आधुनिक युग में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं । आज की नारी शिक्षित है, वह स्वयं अपने परिवार का भार संभालती है और परिवार का सहारा बन गई है । समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के लिए मीनू उच्च शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर बनना चाहती है ।	**[3]**

A.12

i) मीनू को जब पता चला कि अमित का ऐक्सीडेंट हो गया है और वह अस्पताल में है, तब मीनू अमित से मिलने अस्पताल गई । अस्पताल जाते समय मीनू के हृदय में एक अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था कि उसका अस्पताल जाना उचित होगा या नहीं । कई बार उसको अन्त:प्रेरणा ने वापस मुड़ जाने के लिए प्रेरित किया, परंतु वह इस अन्तर्द्वन्द्व में फैसला नहीं कर पाई । उसके कदम अस्पताल की ओर बढ़ते गए । **[2]**

ii) अस्पताल में पहुँचने पर मीनू ने देखा कि अमित की माँ भी वहाँ हैं और उन्होंने मीनू को प्रेमपूर्वक बैठाया और मीनू से पूछा, मीनू, तुम्हारी वकालत तो पूरी हो गई है ना ? उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए मीनू ने कहा हाँ आण्टी, मैंने प्रथम श्रेणी में वकालत पास कर ली है, अब यहाँ मेरठ में ही प्रैक्टिस शुरू कर दी है । **[2]**

iii) मीनू के वकालत पास करने पर अमित की माँ को विशेष प्रसन्नता हो रही थी, यह उनके प्रसन्न मुद्रा से ज्ञात हो रहा था । अमित की माताजी को आज अपनी गलती का अहसास हो रहा था । उन्होंने मीनू को प्रेमपूर्वक बैठाया । उन्हें आज ज्ञात हुआ कि उन्होंने मीनू का रिश्ता ठुकराकर कितनी बड़ी गलती की और आज उनकी इस गलती का दण्ड उनके बेटे को भोगना पड़ रहा है । अमित की माँ मीनू को अपनत्व दिखाते हुए कहती है कि बेटी डॉक्टर अपनी ओर से पूर्ण प्रयास कर रहे हैं कि वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाए । वह कहती है कि आज अमित को दवा और दुआ दोनों की आवश्यकता है, यह कहकर वह उदास हो जाती है । उनके इसी तर्क से ज्ञात होता है कि उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया । **[3]**

iv) मीनू के हृदय में बचपन से ही अपंगों के लिए दया की भावना थी, वह बहुत दयालु व भावुक थी । जब उसने अपहिज मनोहर को देखा तो वह दुखी हो गई उससे मनोहर की हालत देखी नहीं गई । मीनू ने मन-ही-मन निश्चय किया कि वह किसी-न-किसी रूप में मनोहर की सहायता करेगी । ऐसे लोगों की सहायता करने के लिए मीनू ने संकल्प लिया कि वह विवाह के फालतू खर्च में से कुछ रुपये बचाकर उनकी सहायता अवश्य करेगी । मीनू ने मनोहर के लिए एक पान की दुकान खोलकर उसकी सहायता की । **[3]**

A.13

i) मीनू इस समय नीलिमा के घर पर है । मीनू अपनी नीलिमा के पुत्र के नामकरण संस्कार में आई है । अमित नीलिमा के पति सुरेन्द्र का घनिष्ठ मित्र है । वह भी वहाँ नामकरण में आया हुआ है । अमित सुरेन्द्र को ढूढ़ते हुए नीलिमा के कमरे में आया, वही पर अमित व मीनू की मुलाकात हुई । **[2]**

ii) अमित व मीनू का रिश्ता तय हो गया था परंतु माता-पिता की गलती के कारण वह रिश्ता न हो सका । अमित ने मीनू को देखते ही अपनी जीवन संगिनी मान लिया था, परंतु अमित के घरवालों ने जो व्यवहार मीनू के साथ किया, उसकी वजह से मीनू के हृदय में अमित व अमित के परिवार वालों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई । **[2]**

iii) मीनू जब नीलिमा के घर पहुँची तो वहाँ अमित भी आया हुआ था । नीलिमा ने बताया कि अमित सुरेन्द्र का मित्र है और मेरठ के किसी बड़े घर की लड़की के साथ अमित का रिश्ता तय हुआ था । शादी से एक महीना पहले लड़की वालों ने कुछ ऐसी बातें कहीं कि रिश्ता तोड़ना पड़ा । मीनू चुपचाप नीलिमा की बातें सुनती रही । नीलिमा ने मीनू को बताया कि अमित ने मीरापुर में कोई लड़की देखी थी और वह उन्हें बहुत पसंद थी । अमित के माता-पिता के कारण वह रिश्ता टूट गया, परंतु आज वे भी चाहते हैं कि यदि उस लड़की का विवाह न हुआ हो, तो उसी से शादी करें । नीलिमा को यह बात ज्ञात नहीं थी कि वह लड़की मीनू ही है । जब भी अमित की बातें चलती तो मीनू का हृदय अमित के लिए घृणा से भर जाता था परंतु सच्चाई जानने पर आज मीनू को अमित के बारे में की गई बातें अच्छी लग रही थी । **[3]**

iv) मीनू परिस्थितियों से हार माननेवाली लड़की नहीं थी उसने दिखा दिया कि नारी अबला नहीं सबला होती है । जीवन से हार न मानने वाली नारी मीनू ने अपने जीवन का एक लक्ष्य निर्धारित किया कि उसे अपने पैरों पर खड़ा होना था और वह आत्मनिर्भर बनना चाहती थी ।

अमित के घरवालों द्वारा उसका रिश्ता नामंजूर किये जाने पर मीनू के मन में हीन भावना उत्पन्न हो गई और उसने विवाह न करने का निश्चय किया । मीनू ने वकालत में दाखिला लिया और प्रथम श्रेणी में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की और उसने अपने जीवन का ध्येय पूर्ण किया । उसके जीवन का ध्येय था एक अच्छी वकील बनना और समाज में सम्मान की जिंदगी जीना । वह सब हासिल करके मीनू ने सिद्ध कर दिया कि नारी किसी से कम नहीं होती । **[3]**

एकांकी संचय

A.14

i) प्रस्तुत कथन जीवनलाल ने प्रमोद से कहा । प्रमोद कमला का भाई है । जीवन लाल प्रमोद द्वारा दिए गए दहेज से प्रसन्न नहीं थे । प्रमोद अपनी बहन कमला को उसके ससुराल से ले जाने के लिए आया था, जहाँ कमला के ससुर प्रमोद से दहेज की माँग करते हुए कमला की विदाई करने से मना कर देते हैं । वे प्रमोद का यह कहकर अपमान करते हैं कि तुमने बारात की खातिरदारी ठीक से नहीं की और तुम्हारी वजह से बिरादरी में मेरी नाम कट गई । **[2]**

ii) 'मरहम' का अर्थ होता है 'दवा' परंतु यहाँ मरहम से तात्पर्य है 'दहेज' । जीवनलाल को यह लगता है कि प्रमोद एवं उसके परिवार वालों ने बेटी वाले होने का फर्ज नहीं निभाया अर्थात उन्होंने अपनी बहन कमला को पूरा दहेज नहीं दिया और बारात की खातिरदारी भी ठीक से नहीं की । जिस कारण जीवनलाल को समाज में शर्मिन्दा होना पड़ा और उनके सम्मान को ठेस पहुँची है । जीवन लाल के अनुसार इस चोट का इलाज केवल दहेज के पाँच हज़ार रुपये देकर ही किया जा सकता है और यही दहेज उनके घाव के लिए मरहम के समान है । **[2]**

iii) वक्ता जीवन लाल की उम्र पचास वर्ष है । वह गम्भीर स्वभाव के एक धनी व्यापारी हैं । वह लोभी अहंकारी, भावना शून्य व्यक्ति हैं, जो संबंधों की अपेक्षा धन को अधिक महत्त्व देते हैं । वह बहू और बेटी को एक ही तराजू में तौलना नहीं चाहते हैं और बहू और बेटी में भेद-भाव करते हैं । जीवनलाल अपनी लोभी प्रवृति के कारण ही अपनी बहू कमला को मायके के लिए विदा करने से मना कर देते हैं । जीवनलाल में अहंकार कूट-कूट कर भरा है । उनके अहंकारी स्वभाव का पता तब चलता है, जब वह अपनी बेटी गौरी के विवाह का बखान स्वयं करते हैं और प्रमोद को लज्जित करते हैं । **[3]**

iv) प्रस्तुत एकांकी में 'दहेज प्रथा' की समस्या को उठाया गया है । समाज में व्याप्त दहेज की कुप्रथा के परिणामों को दर्शाया गया है । इस समस्या को दूर करने के लिए सरकार द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं । दहेज विरोधी कानून बनाए गए हैं । सरकार द्वारा उठाए गए ठोस कदम तभी कारगर साबित होंगे जब समाज के लोगों की जागरुकता बढ़ेगी । दहेज प्रथा की समस्या को समाप्त करने के लिए युवाओं को आगे आना होगा और दहेज रहित विवाह को बढ़ावा देना होगा । उन्हें संकल्प लेना होगा कि वे न दहेज लेंगे और न देंगे । यदि हमारे देश के युवाओं में जागरुकता आएगी तभी समाज से दहेज प्रथा की समस्या समाप्त होगी । **[3]**

A.15

i) उपरोक्त कथन का वक्त महाराणा लाखा हैं और श्रोता अभय सिंह हैं । महाराणा लाखा मेवाड़ के शासक हैं । ये पराक्रमी, साहसी, विवेकशील तथा वीरता का सम्मान करने वाले शासक हैं । यह उनके द्वारा ली गई कठोर प्रतिज्ञा से ही लगाया जा सकता है, जिसमें वे तब तक अन्न-जल ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा लेते हैं, जब तक वे बूँदी में ससैन्य प्रव्रश नहीं कर लेते ।

	अभयसिंह मेंवाड़ के सेनापति हैं । वह एक चतुर, समझदार और विश्वास पात्र हैं । वह वीर, साहसी व समझदार सेनापति हैं ।	[2]
ii)	बूँदी के शासक रावहेमू द्वारा मेवाड़ की गुलामी अस्वीकार करने पर महाराणा लाखा का स्वयं के आत्मसम्मान पर प्रहार-सा महसूस हुआ । उन्होंने बूँदी को पराजित करने के लिए एक भीषण प्रतिज्ञा ली कि जब तक वह बूँदी पर ससैन्य प्रवेश नहीं कर लेते, तब तक वह अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे । बूँदी के शासक राम हेमू द्वारा किए गए अपमान से महाराणा लाखा को आघात पहुँचा और उन्होंने ऐसी कठोर प्रतिज्ञा कर ली ।	[2]
iii)	हाड़ा वंश के राजा राव हेमू थे । वे बूँदी के शासक थे । हाड़ा के लोगों के लिए कहा गया है कि वे इतने, वीर, निर्भीक और साहसी हैं कि युद्ध करने में वे यम से भी नहीं डरते । वीर सिंह जो बूँदी का रहने वाला हाड़ा वंश का वीर है । अपनी वीरता का परिचय देकर वीर सिंह इतिहास में अमर हो गया । प्रत्येक हाड़ा वंश वीर अपनी मातृभूमि के लिए अपनी जान की बाजी लगाने को भी तैयार रहते हैं । जहाँ पर भी एक हाड़ा है वहाँ बूँदी का अपमान कोई नहीं कर सकता, चाहे वह बूँदी का नकली दुर्ग ही क्यों न हो । हाड़ा वंश का वीर सपूत वीर सिंह अपनी जन्मभूमि बूँदी का अपमान होते नहीं देख सका और अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिए उसने अपने प्राणों की बलि दे दी ।	[3]
iv)	''प्राण जाएँ पर वचन न जाएँ '' कहावत का अर्थ है - दिए गए वचन का पालन करने के लिए प्राण भी त्याग देना । यह कथन महाराण लाखा द्वारा कहा गया है । महाराणा लाखा ने आवेश में जो विवेकहीन प्रतिज्ञाा की थी कि जब तक ससैन्य बूँदी में प्रवेश नहीं करूँगा, तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करुँगा । महाराणा की प्रतिज्ञा सुनकर उनका विश्वसनीय सेनापति अभय सिंह उनसे प्रतिज्ञा वापस लेने के लिए कहते हैं तब महाराणा लाखा कहते हैं कि 'प्राण जाएँ पर वचन न जाएँ' - यह हमारे जीवन का मूल-मंत्र है, जो तीर तरकश से निकलकर कमान पर चढ़ कर छूट गया, उसे बीच में नहीं लौटाया जा सकता ।	[3]
A.16		
i)	उपर्युक्त कथन दादा मूलराज अपनी पोती इन्दु से कहते हैं , जब दादाजी की छोटी पतोहू बेला अपने ससुराल में आती है तो परिवार में हलचल मच जाती है किंतु बेला सबसे अधिक पढ़ी-लिखी थी । छोटी बहू बेला के परिवार में न धुल-मिल पाने के कारण इंदु बेला से नाराज है । दादाजी नहीं चाहते कि किसी कारण वश बेला परिवार से अलग हो इसलिए वे इंदु हैं समझाते है कि बेला का सम्मान करें ताकि उसका मन उस घर में लग जाए ।	[2]
ii)	सब डालियाँ साथ-साथ फलने-फूलने का आशय हैं कि परिवार के सभी सदस्य एक साथ मिल-जूल कर प्रेम से रहें । डालियों से ही पेड़ बनता है चाहे डालियाँ छोटी हो या बड़ी अर्थात परिवार के छोटे-बड़े सदस्यों से ही पूरा परिवार बनता है । घर के सारे सदस्यों से ही घर की शोभा बढ़ती है । परिवार के प्रत्येक सदस्य खुश रहेगा तो परिवार में खुशहाली रहेगी और एक हरे-भरे वृक्ष की भाँति लहराएगा सभी को हरे-भरे वृक्ष की शीतल छाया प्राप्त होगी । 'डालियाँ' शब्द का प्रयोग यहाँ परिवार के सदस्यों के लिए किया गया है । जिस प्रकार पेड़ की डालियों से पेड़ हरा-भरा दिखता है, वैसे ही परिवार के सदस्यों से परिवार खुशहाल दिखता है ।	[2]
iii)	परिवार के मुखिया दादा मूलराज की आकांक्षा है कि सब खुशहाल रहें क्योंकि वे नहीं, चाहते कि परिवार के किसी भी सदस्य के मन में कुछ मतभेद हो । अगर ऐसा हुआ तो परिवार के बिखरने का भय रहेगा । वह परिवार के सभी सदस्या के मन में प्रेम-भावना जाग्रत करना चाहते हैं ताकि कोई परिवार से अलग न हो, जिस प्रकार बरगद का पेड़ अपनी शरण में आए प्राणियों को शीतल छाया प्रदान करता है, उसी प्रकार दादाजी चाहते हैं कि	

	परिवार के सभी सदस्य उनकी छत्र-छाया में रहें । वे अपने परिवार को अपनी सुखद छाया का आनंद प्रदान करना चाहते हैं । इस एकांकी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें सहनशील व समझदार होना चाहिए और परिवार के प्रत्येक सदस्य का सम्मान करना व उनकी भावनाओं को समझना चाहिए । एकता में ही बल होता है । यदि परिवार में मिल-जुलकर रहें, तो प्रत्येक समस्या का समाधान सहजता से हो जाता है ।	**[3]**
iv)	प्रस्तुत कथन से दादाजी के उच्च विचारों का पता चलता है वह परिश्रमी, साहसी व निष्ठावान व्यक्ति हैं और अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य का ध्यान रखते हैं । उम्र में 72 वर्ष के होने पर भी उनका शरीर झुका नहीं है । छोटी बहू बेला की गलतियों को भी वह सहजता से नज़रअंदाज़ करते हैं और अपनी सूझ-बूझ से परिवार वालों को समझा-बुझाकर बेला का ध्यान रखने के लिए कहते हैं । दादाजी के चरित्र से यह सिद्ध होता है कि परिवार की जिम्मेदारी किसी समझदार व्यक्ति के हाथ में होने पर ही परिवार की भलाई है, परिवार के मुखिया को दादा मूलराज की तरह सूझ-बूझ वाला, साहसी, निष्ठावान, सहनशील और मधुरभाषी होना चाहिए । उसमें परिवार को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता होनी चाहिए, जो हमें दादाजी के स्वभाव में देखने को मिलता है । दादाजी एक परिपक्व बुद्धि के स्वामी हैं, जो एक ऐसा उपाय ढूँढ़ निकालते हैं कि गृहकार्य में सहयोग न करने वाली स्त्री भी घर के कार्यों में स्वेच्छा से सहयोग देने लगती है । दादाजी ने अपने कोमल स्वभाव से कठोरता को भी कोमलता में बदलने की बात सिद्ध कर दी ।	**[3]**

❖❖❖❖